1964G Contemplation of Jinvars by Bhudhardas

Pandit Bhudhar Das Ji aur unka Jinvar Stavan (In Sanmati Sandesh, 1964)

पं० भूधरदास जी और उनका जिनवर-दर्शन स्तवन

श्री पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर

आगरे को जिन विद्वानों और कवियों की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उनमें पण्डित भूधरदास जी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जैन थे और सस्कृत प्राकृत एव हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। अब तक इनकी तीन रचनाएँ प्रकाश में आई हैं—पार्श्वपुराण, जैनशतक और पदसंग्रह। जैन समाज में इसका सर्वत्र प्रचार है और उनके पद तो भारतवर्ष के चारों ओर कोनों तक लोगों को कण्ठस्थ हैं। इनका समय वि० सं० १७५० से १८०६ तक माना जाता है। इन्होंने पार्श्वपुराण को वि० सं० १७८९ में पूर्ण किया है।

ऐ० पन्नालाल सरस्वती सदन के गुटकों को छानवीन करते हुए अभी मुझे इनकी एक रचना प्राप्त हुई है जो भी पद्मनन्दि मुनि द्वारा प्राकृत भाषा में, रचित जिनवर दर्शन स्त्रोत की हिन्दी पद्यानुवाद के रूप में है। यह मूल स्त्रोत पद्मनन्दि-पंचविंशतिका में पन्द्रहवें नम्बर पर मुद्रित है। आर्या छन्द में बहुत ही भावपूर्ण रचना है। इसकी गाथा-संख्या ३४ है। इसीका हिन्दी चौपाई छंद में पं० भूधरदास जो ने रूपान्तर किया है। पाठक दोनों स्तोतत्रों के भक्तिरस का एक साथ रसस्वादन कर सकें, इसलिये दोनों को एक साथ बराबरी में दिया जा रहा है। आशा है यह पाठकों के हृदय में जिन दर्शन की भक्ति को और भी वृद्धिगत करेगा।

मूल स्तोत्र के समान ही इसके छंदों की संख्या भी ३४ ही है, पर मिलान करने पर ज्ञात हुवा कि प्रारम्भिक दोहा उत्थानिका रूप है, अतएव उन्नीसवें नम्बर की गाथा का छन्द प्रस्तुत गुटकों में नहीं मिला है। संभव है कि वह लेखक की भूल से लिखने से रह गया हो अथवा यह भी संभव है कि पंडितजी को जो मूल पाठ मिला हो, उसमें उन्हें यह गाथा ही न मिली हो। जो कुछ भी हो, मैंने उसका स्थान खाली छोड़ना उचित नहीं समझा और स्वयं ही एक चौपाई बनाकर रिक्त स्थान की पूर्ति कर दी है और उसे [ ] खड़े कोष्ठक में दिया है। यदि किसी सज्जन को किसी गुटके की आदि में उक्त गाथा का पंडित जी रचित छन्द मिल जावे, तो वे उसे इसी या अन्य पत्र पत्रिका में अवश्य प्रकाशित करने की कृपाकरें, तथा मेरे द्वारा लिखी चौपाई में जो त्रुटि है, उससे अवगत करावें।

श्री जिनवर दर्शन स्तवन

दोहा—उपजौ उर आनन्द अति, देखि बिम्ब भगवान्।
पद्मनन्दि मुनि करत हैं, जिन दर्शन गुण-गान॥

आचार्य पद्मनन्दि—विरचित	पंडित भूधर-रचित
१	१
दिट्ठे तुम्मि जिणवर सहलीहूआइं मज्झ णयणाइं। चित्तं गत्तं चलहु अमियरण व सिंचियं जायं॥	जय जिनवर जगजलधि जिहाज, सफल भये मुझ लोचन आज मन तन सकल सिरानों येम, अमृत धारसों सिंचत जेम

२

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर दिट्ठिहरासेस मोहतिमिरेण ।
तह णट्ठं जह दिट्ठं जहट्ठियं तं मए तच्चं ॥

३

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर परमाणन्देण पूरियं हिययं ।
मज्झ तहा जह मण्णे मोक्खं पिव पत्तमप्पाणं ॥

४

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर णट्ठं चिय मण्णयं महापावं ।
रवि उग्गमे निसाए ठाइ तमो कित्तियँ कालं ॥

५

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर सिज्झइ सो कोवि पुण्णपब्भारो।
होइ जणो जेण पहु इह परलोयत्थ सिद्धीणं ॥

६

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर मण्णे तं अप्पणो सुकय लाहं ।
होहि सो जेणासरिस सुहणिही अक्खओ मोक्खे ॥

७

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर संतोसो मज्झ तह परो जाओ ।
इंदविहवोवि जणइ ण तण्हाणेसंमि जह हियए ॥

८

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर वियारपडिवज्जिए परमसंते ।
जस्स ण हिट्ठो दिट्ठो तस्स ण णवजम्म विच्छेओ ॥

९

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर जम्महकज्जंतराउलं हिययं ।
कइयावि होइ पुव्वा जियस्स कम्मस्स सो दोसो ॥

१०

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर अच्छउ जम्मंतरं ममेहावि ।
हसा सुहेहिं घडियं दुक्खेहिं पलाइयं दूरं ॥

११

ट्ठे तुमम्मि जिणवर बज्झइ पट्टो दिणम्मि अज्जयणे।
लत्तणेण मज्झे सव्वदिणाणं पि सेसाणं ॥

१२

ट्ठे तुमम्मि जिणवर भवण मिणं तुज्झ महमहग्घवतरं।
णं पि सिरीणं संकेयघरं व पडिहाइ ॥

२

तुमें देखि जिनवर जगतेस, महामोह अंधार असेस ।
नष्ट भयो अब स्वामि-स्वरूप, देख्यो देव जथारथ रूप ॥

३

तुमे देखि जिनवर दुख गयो, परमानन्द हिये अति भयो ।
किधों आज मुझ प्रातम राम, मोक्षमहल कीनों विसराम ॥

४

तुमें देखि जिन मान्यों आप, नास भयो मम पूरव पाप ।
जब सूरज मंडल लहलहें, रजनी-तम तब कोलों रहै ॥

५

तुमें देखि जिन जनकों सोइ, सीझे पुण्य पुंज वरै कोइ ।
जाकरि उभय लोक में आय, रिद्धि सिद्धि सब सेवें पाय ॥

६

तुमें देखि जिनवर थिर होइ, मान्यों सुकृति-लाभ हम सोइ ।
जा प्रसाद होसी शिव-वास, उपमातीत अखय सुखरास ॥

७

तुमें देखि जिनवर जिनदोष, उपजै हिये परम संतोष ।
अब मो इन्द्र-विभव अलवेस, उर अभिलाष जनें नहि लेस॥

८

तुमें देखि जिन विगत विकार, परम शान्त मुद्रा मनहार ।
जिसकी दृष्टि हरष नहिं होय, दीरघ संसारी नर सोय ॥

९

तुमें देखि जिनवर गुण-गेह, जो कबहूँ मेरे उर येह ।
और काजकरि आकुल होत, सो पूरव कृत कर्म उदोत ॥

१०

तुमें देखि जिनवर जगदीश, दूर रहो जन्मान्तर ईश ।
अब ही मोहि महासुख भयो, सब दुख-पूर तूर भंज गयो॥

११

तुमें देखि हम पाठौ ईश, बांध्यो आज दिवस के सीस ।
सब दिन में दिन यही प्रधान, और अशेष अकारथ जान ॥

१२

तुमें देखि जिनवर भगवान, यह मनोग तुव भवन महान ।
सकल लोक लक्ष्मी को जेम, एकघांन मुझ दीसे येम ॥

१३

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर भत्तिजलोल्लं समासियं छेत्तं।
जं तं पुलयमिसा पुण्णबीयमंकुरियमिव सहइ ॥

१४

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर समयामयसायरे गहीरम्मि।
रायाइदोसकलुसे देवे को मण्णइ सयाणे ॥

१५

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर मोक्खो अइदुल्लहो वि संपडइ।
मिच्छत्तमल कलंकी मणो ण जइ होइ पुरिसस्स ॥

१६

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर चम्ममएणच्छिणावि तं पुण्णं।
जं जणइ पुरो केवलदंसणणाणाइ णयणाइ ॥

१७

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर सुकयत्थो मण्णओ ण जेणप्पा।
सो बहुयबुड्डणुब्बु डुणाइं भवसायरे काही ॥

१८

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर णिच्छयदिट्ठीय होइ जं किंपि।
ण गिराय गोचरं तं साणुभवत्थ पि किं भणिमो ॥

१९

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर दट्ठव्वावहिविसेसरूवम्मि।
दंसणसुद्धीय गयं दाणिमह णत्थि सव्वथा ॥

२०

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर ॰हियं सुहिया समुज्जला होइ।
जण दिट्ठी को पेच्छइ तद्दंसणसुहयरं सूरं ॥

२१

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर बुहम्मि दोसोज्झियम्मि वीरम्मि।
कस्स किररमइ दिट्ठी जडम्मि दोसायरे खत्थे ॥

२२

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर चिंतामणि कामधेणु कप्पतरू।
खज्जोयव्व पहाए भज्झ मणे णिप्पहा जाया ॥

२३

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर रहसरसो मह मणम्मि जो जाओ।
आणंदंसुमिसा सो तत्तो णीहरइ बहिरंतो ॥

१३

तुमें देखि जिन भावसमेत, भक्ति-नीर सिंचत तन-खेत।
मानों रोमांचित-मिस भूर, निकसे सुन्दर सुख अंकूर ॥

१४

तुमें देखि जिनवर जगवीर, समतामृत - सागर गम्भीर।
रागी द्वेषी देव मलान, तुम तजि को मानें मतिमान ॥

१५

तुमें देखि जिनवर भय भजै, मोक्ष धाम दुर्लभ संपजै।
जो मिथ्यात-मल पंक-कलंक, होइ न मानुष के मन-अंक ॥

१६

तुमें देखि होहै सरवेश, चर्म दिष्टिसों पुण्य-विशेष।
सो वर लाचन कारन जान, केवलदर्शन केवलज्ञान ॥

१७

तुमें देखि जिन परमातमा, जे नहिं सफल गनें आतमा।
ते अभागि भव-सागर-मांहि, बूड़ें, तिरैं पार नहिं जांहि ॥

१८

तुमें देखि जिनवर जगपोत, नियत दिष्टि-बल जो कुछ होत।
नहीं वचन-गोचर वह आहि, अनुभव-गम्य कहो क्यों ताहि॥

१९

[तुमें देखि जिनवर दृष्टव्य, निरवधिरूप विशेष समृद्ध।
दर्शन शुद्धि मैं पाई आज, क्यों न सरैं सर्वत्र सुकाज ॥]

२०

तुमें देखि जिनवर जन-नैन, होहिसुखित अति उज्ज्वल ऐन।
को देखे दिठ्ठहर दुख मूल, मारतंड-मंडल दुख भूल ॥

२१

तुमें देखि जिनवर धरधीर, ज्ञानी विगत-दोष वरवीर।
किसकी दिष्टि रमें अब तास, जड दोषाकर वसंत अकास ॥

२२

तुमें देखि चिन्तामणि रैन, कल्पवृक्ष कामाभिध धेंन।
फीके लगें सबं मुझ येम, दिनकर उदय आगिया जेम ॥

२३

तुमें देखि जिनवर जगराय, अतुल हर्ष-रस उर न समाय।
तातें बाहिर निकसै सोय, आनन्द अंसुवन के मिस होय ॥

२४

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर कल्लाणपरंपरा पुरो पुरिसे ।
संचरइ अणाहूयावि ससहरे किरणमालव्व ।।

२५

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर दिसवल्लीओ फलंति सव्वाओ ।
इट्ठं अहुल्लिया विहु वरिसइ सुण्णं पि रयणेहिं ।।

२६

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर भव्वो भयवज्जिओ हवइ णवरं ।
गयणिद्दं चिय जायइ जोण्हा पसरे सरे कुमुय ।।

२७

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर हियएण महासुहं समुल्लसियं ।
सरिणाहेणिव सहसा उग्गमिए पुण्णिमाइंदे ।।

२८

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर दोहिमि चक्खूहिं तह सुही अहियं।
हियए जह सहसच्छोहोमित्ति मणोरहो जाओ ।।

२९

दिट्ठे तुमम्हि जिणवर भवोवि मित्तणं गओ एसो ।
एयम्मि ठियस्स जऊ जायं तुह दंसणं मज्झ ।।

३०

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर भव्वाणं भूरिभत्ति जुत्ताणं ।
सव्वाओ रिद्धीओ होंति पुरो एक्कलीलाए ।।

३१

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर सुहगइ संसाहणेक्क बीयम्मि ।
कंठ गयाजीवियस्स वि धीरं सपज्जए परमं ।।

३२

दिट्ठे तुमम्मि-जिणवर कमम्मि सिद्धेण किं पुणो सिद्धं।
सिद्धियर को णाणी महइ ण तुह दसण तम्हा ।।

३३

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर पोम्मकयं दसणत्थुई तुज्झ ।
जो पढु पढइ तियालं भयजालं सो समोसरइ ।।

३४

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर भवियमिणं जणिय जणमणाणंदं।
भव्वेहिं पढिज्जतं णंदउ सुइरं धरावीढे ।।

२४

तुमें देखि जिन मंगल-पांति, नर के निकट रहे इहि भांति ।
ज्यों शशि-संग किरण छवि धरे, अनाहूत आगे संचरे ।।

२५

तुमें देखि जिन शान्त सुवेश, विन फूलें दिस बेलि अशेष ।
सदा इष्ट फल फलें अनून, मणि-धारनि वरसे नभ-सून ।।

२६

तुमें देखि जिनवर जग-पीव, निर्भय होइ रहैं भवि जीव ।
ज्यों रजनी-पति किरण-प्रकाश, विकसें कुमुद सरोवर-वास।।

२७

तुमें देखि जिनवर जगबंध, उमगै हिये असम आनन्द ।
ज्यों पूनों दिन पूरन कढ़ै, चढ़त चंद ज्यों वारिधि बढ़ै।।

२८

तुमें देखि जुग नयननि देव, मैं अति सुखी भयो स्वयमेव ।
हों अब सहस-अच्छ इहि वार, यों उर होत मनोरथ सार।।

२९

तुमें देखि जिनवर शुभ थयो, यह ससार मित्र मुझ भयो ।
जहाँ रहत प्रभु दर्शन सिद्ध, भई मोहि इन यह गुण किद्ध।।

३०

तुमें देखि जे पुरुष पुनीत, भक्ति बढ़ाइ धरें उर प्रीत ।
तिन्हें सबै वर रिद्धि अनूप, आय मिलें सहजें सुख रूप ।।

३१

तुमें देखि अघ-हरण अनेक, शुभगति-साधन कारण एक ।
उपजै धीरज परम प्रधान, यद्यपि रहें कंठ में प्रान ।।

३२

तुमें देखि किम सिद्ध न सोय, क्रम करि सिद्ध सिद्धपद होय।
तातें कौन विचक्षण जीव, तुव दर्शन वांछै न सदीव ।।

३३

तुमें देखि दर्शन-थुति कीन, पदमनन्दि मुनिराज प्रवीन ।
तजि प्रसाद जे पढ़ें त्रिकाल, ते सुख लहें तोरि जगजाल ।।

३४

दोहा—भूधर जिन दर्शन सुजस, पढ़त बढ़त बहु तोष ।
बहु दिन विरधौ भूमि पर, करहु कंठ जन घोष।।